eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

सागर उच्चभूमि क्षेत्र में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप का अध्ययन

[1]डॉ. दीपचंद अहिरवार
[1]सा0 वि0 अध्ययन शाला, भूगोल विभाग, पंडित एस.एन. शुक्ला विश्वविद्यालय शहडोल (म.प्र.)

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

व्यावसायिक संरचना किसी भी क्षेत्र की आर्थिक सम्पन्न्ता अथवा विपन्नता का सही व समुचित प्रतिनिधित्व करती है। इसमें जनसंख्या की जितनी अधिक भागीदारी होगी उस क्षेत्र का आर्थिक विकास उतना ही अधिक समुन्न्त होगा। व्यावसायिक संरचना प्रभावित होने पर उत्पादन व विकास दोनो घटने लगता है। व्यावसायिक संरचना को उत्तम एवं सुदृढ़ बनाने हेतु अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख तत्व जैसे– कृषि प्रधान, उद्योग प्रधान, अर्द्ध उद्योग प्रधान व अन्य कार्योत्पादन में जनसंख्या के आय संरचना, क्रय शक्ति, सामाजिक– आर्थिक स्तर, आर्थिक संतुलन निर्धारण, आर्थिक समस्याओं के निर्धारण व रूपान्तरण हेतु आर्थिक योजना के निर्माण में योगदान आधार स्तम्भ सिद्ध होता है (मौर्य, 2020)। व्यावसायिक संरचना जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण आर्थिक गुण हैं, जो किसी प्रदेश के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक तथा जनांकिकी विशेषताओं को प्रभावित व नियंत्रित करती है तथा व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाओं के निर्माण का आधार प्रस्तुत करती है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र के आर्थिक स्तर का मूल्यांकन हेतु व्यवसायिक संरचना का विश्लेषण करना आवश्यक है। अतः अध्ययन क्षेत्र के समुचित आर्थिक विकास हेतु विभिन्न विकास के मध्य जनसंख्या के वितरण में संतुलन स्थापित होना चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7545 वर्ग कि.मी. है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 1676241 है। अध्ययन क्षेत्र में 2011 में कुल कार्यशील जनसंख्या 42.77 प्रतिशत, काश्तकार 22.61 प्रतिशत, खेतिहर मजदूर 28.87 प्रतिशत, परिवारिक उद्योग में 14.62 प्रतिशत, अन्य कर्मी 33.90 प्रतिशत एवं सीमान्त कार्यशील 23.34 प्रतिशत है।

Keywords- अकार्यशील, कार्यशील, जनसंख्या, मुख्य कार्यशील, सीमांत कार्यशील, कृषि, व्यवसाय।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

Introduction

व्यावसायिक संरचना किसी भी क्षेत्र की आर्थिक सम्पन्नता एवं विपन्नता का सही प्रतिनिधित्व करती है। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य उस क्षेत्र के विभिन्न आर्थिक कार्यो में कार्यरत जनसंख्या से है। मानव द्वारा जीविकोपार्जन तथा जीवन यापन के लिए व्यवहृत समस्त आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय की संज्ञा दी जाती है। जनांकिकी अध्ययन में व्यावसायिक संरचना का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके द्वारा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के स्वरूप, आर्थिक विकास के स्तर तथा सभ्यता विकास के सोपानों का आभास मिलता है। व्यावसायिक संरचना द्वारा अध्यासित जनसंख्या किसी व्यक्ति विशेष की व्यावसायिक स्थिति उसके भाव–विचार, सामाजिक दृष्टिकोण व्यक्तित्व तथा उसके द्वारा स्थापित राजनैतिक सम्बद्धता एवं परिवर्तन की झलक मिलती है।

शर्मा (1983) के अनुसार किसी भी क्षेत्र के लोगों की व्यावसायिक संरचना उसके आर्थिक एवं सामाजिक विकास का प्रतिविम्ब है। अग्रवाल (1977) ने भी स्पष्ट किया है कि व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से क्षेत्र विशेष के निवासियों के रहन–सहन एवं जीवन–यापन के स्तर का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। गार्नियर (1978) ने भी स्वीकार किया है कि कार्यरत जनसंख्या अपने आर्थिक कार्यकलापों द्वारा स्वयं तथा अपने आश्रितों का भरण–पोषण करती है। व्यावसायिक संरचना से एक तरफ जहाँ क्षेत्र के आर्थिक विकास स्तर की जानकारी प्राप्त होती है जिससे ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान, उद्योग प्रधान या अर्द्ध उद्योग प्रधान है। वही दूसरी ओर वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या की आय संरचना, क्रय शक्ति, रहन–सहन के स्तर की झलक मिलती है।

एक विकसित राष्ट्र या क्षेत्र के अर्थतंत्र हेतु यह आवश्यक है कि विभिन्न व्यावसायों के मध्य जनसंख्या के वितरण में संतुलन हो। अस्तु, व्यावसायिक संरचना जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण आर्थिक गुण है, जो किसी प्रदेश के सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक तथा जनांकिकी विशेषताओं को प्रभावित व नियंत्रित करती है तथा व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास हेतु योजनाओं के निर्माण का आधार प्रस्तुत करती है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र के आर्थिक स्तर का मूल्यांकन हेतु व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण करना आवश्यक है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

अध्ययन का उद्देश्य– व्यावसायिक संरचना का सभी पहलुओं पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है यहा उन सभी तथ्यों से अवगत कराना है जो अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए सहायक सिद्ध होता है। अतएव प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य–

1. अध्ययन क्षेत्र की कार्यशील व अकार्यशील जनसंख्या प्रतिरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में मुख्य कार्यशील व सीमांत कार्यशील जनसंख्या का मूल्यांकन करना।
3. व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप के आधार पर आर्थिक स्तर का मूल्यांकन करना ।
4. व्यावसायिक जनसंख्या के प्रादेशिक वैविध्य का विश्लेषण करना।

अध्ययन क्षेत्र–

मध्यप्रदेष राज्य के अंतर्गत सागर उच्चभूमि क्षेत्र का चयन एवं नामांकन राष्ट्रीय नेशनल एटलस तथा थीमेटिक मानचित्रण संगठन द्वारा प्रकाशित फिजिकल प्लेट्स 29 तथा 32 के आधार पर किया गया है। इस उच्चभूमि का विस्तार मध्यप्रदेश राज्य के सागर तथा रायसेन जिले ($23^0 10'$ से $24^0 27'$ उत्तरी अक्षांश तथा $78^0 05'$ से $79^0 21'$ पश्चिमी देशान्तर के मध्य) में है। यह सागर जिले के बीचोबीच उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम दिशा में कर्ण के रूप में विस्तृत क्षेत्र है, इसके दक्षिण–पश्चिमी भाग का विस्तार रायसेन जिले के उत्तर–पूर्वी भाग पर है। इस उच्चभूमि का क्षेत्रफल लगभग 7545 वर्ग किलोमीटर आता है, जो इस उच्च भूमि में आने वाले दोनो जिलों के क्षेत्रफल का 40.3 प्रतिशत है। सन् 2011 में इस भाग पर 16.76 लाख व्यक्ति निवास करते हैं। जनसंख्या का गणितीय घनत्व 222 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर आता है जो राज्य के औसत घनत्व 236 से कम है। कुल जनसंख्या का 67.60 प्रतिशत ग्रामीण है। कुल जनसंख्या में 20.67 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 08.10 प्रतिशत् अनुसूचित–जनजातियों का हिस्सा है। इस उच्चभूमि की निचली सीमा 450 मीटर की समोच्च रेखा द्वारा निर्धारित होती है। इस समोच्च रेखा की परिधि में आने वाले उन विकासखण्डों को अध्ययन की इकाई के रूप में लिया गया है, जिनका आधे से अधिक भाग इसकी सीमा में आता है। इस तरह सागर जिले के छः विकासखण्ड तथा रायसेन जिले के दो विकासखण्ड सागर उच्चभूमि में सम्मिलित किए गए हैं (मानचित्र संख्या–0.1)

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

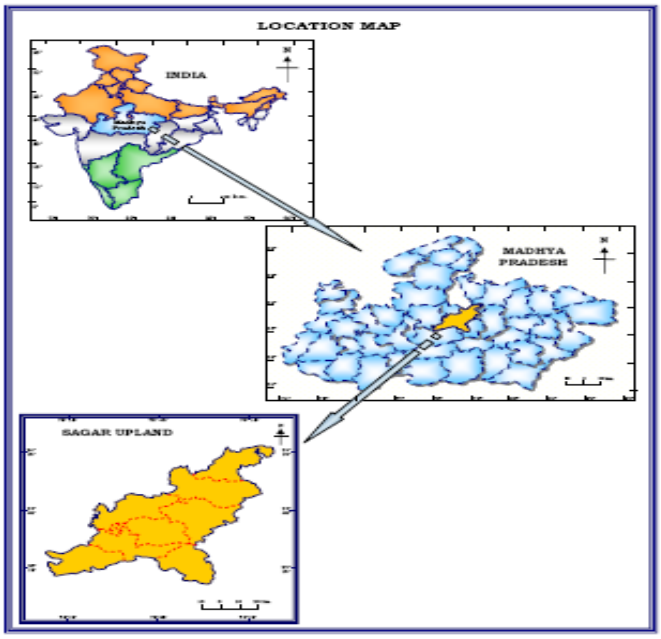

Map 0.1

विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। व्यावसायिक संरचना में कार्यशील जनसंख्या को आधार मानकर सम्पूर्ण व्यावसायिक जनसंख्या को मुख्य रूप से मुख्य कार्यशील जनसंख्या और सीमांत कार्यशील जनसंख्या में रखा गया है। मुख्य कार्यशील जनसंख्या को चार श्रेणियों (काश्तकार, खेतिहर मजदूर, परिवारिक उद्योग कर्मी तथा अन्य कर्मी) में वर्गीकृत कर विश्लेषण किया गया है।

अकार्यशील जनसंख्या –

जनसंख्या का वह भाग जो उत्पादक कार्य में संलग्न नहीं होते उन्हें अकार्यशील जनसंख्या की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है। इसे आश्रित तथा निर्भय या निष्क्रिय जनसंख्या भी कहते है। इसमे 0–14 आयु–वर्ग के बच्चे तथा 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध लोग समाहित होते हैं। इसके अतिरिक्त अकार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत विकलांग बेरोजगार व्यक्ति, गृहणी, भिखारी, चोर, दलाल, तस्कर तथा विद्यार्थी आते हैं। साथ ही अनाथालयों व जेलों तथा चिकित्सालयों में स्थाई या अस्थाई रूप से शारीरिक व मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति अकार्यशील जनसंख्या में शामिल है। यह जनसंख्या आर्थिक दृष्टि से अनुत्पादक या उपभोक्ता वर्ग से है, जो कार्यशील जनसंख्या पर निर्भर रहती है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

सारणी – 1

सागर उच्च भूमि : अकार्यशील एवं कार्यशील जनसंख्या, 2011

(कुल जनसंख्या से प्रतिशत)

क्र.	विकासखण्ड	कुल जनसंख्या	अकार्यशील जनंसख्या		कार्यशील जनसंख्या	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सगर	655082	395037	60.31	260045	39.69
2	जैसीनगर	167933	96501	57.46	71432	42.54
3	राहतगढ़	124099	68406	55.12	55693	44.88
4	केसली	116951	58524	50.04	58427	49.96
5	बण्डा	202594	109997	54.29	92597	45.71
6	शाहगढ़	138054	75638	54.79	62416	45.21
7	गैरतगंज	125018	71398	57.11	53620	42.89
8	बेगमगंज	146510	83846	57.23	62664	42.77
कुल		1676241	959347	57.23	716894	42.77

स्रोत : जिला जनगणना पुस्तिका 2011, जिला सागर एवं रायसेन जनगणना कार्यालय भोपाल।

सागर उच्च भूमि क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 57.23 प्रतिशत जनसंख्या अकार्यशील है। प्रादेशिक आधार पर क्षेत्र में अकार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत सागर विकासखण्ड (60.31 प्रतिशत) में आंकलित है, जबकि अकार्यशील जनसंख्या का न्यूनतम प्रतिशत केसली विकासखण्ड (50.04 प्रतिशत) में दृष्टव्य हुआ। कुल कार्यशील जनसंख्या का विकासखण्डवार न्यूनतम से अधिकतम प्रसरण 50.04 प्रतिशत (केसली विकासखण्ड) से 60.31 प्रतिशत (सागर विकासखण्ड) के बीच मिलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सागर विकासखण्ड में अकार्यशील जनसंख्या का अधिग्रहण अपेक्षाकृत अन्य विकासखण्डों से अधिक है। परिणामतः केसली विकसखण्ड में अकार्यशील जनसंख्या की न्यूनता उच्चतम कार्यशीलता दर को प्रदर्शित करती है (सारणी –1)।

अकार्यशील जनसंख्या की प्रधानता किसी भी अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक– आर्थिक विकास में अवरोधक का कार्य करती है, क्योंकि क्षेत्र विशेष में सीमित लोगों द्वारा उत्पादन एवं उससे कई गुना लोगों द्वारा उपभोग किया जाता है। अकार्यशील जनसंख्या की प्रधानता क्षेत्र विशेष में अनेक

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है। अध्ययन क्षेत्र में अकार्यशील जनसंख्या का प्रमुख कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप युवा जनसंख्या की प्रधानता, स्त्रियों की आर्थिक क्रिया–कलापों में अल्प भागीदारी तथा बेरोजगारी का प्रतिफल है।

कार्यशील जनसंख्या

जनसंख्या के कार्यात्मक स्वरूप से तात्पर्य कुल जनसंख्या में कार्यरत जनंसख्या के संरचनात्मक प्रतिरूप से है (प्रसाद एवं अन्य, 2007)। कार्यशील जनसंख्या वह जनसंख्या होती है, जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से किसी न किसी आर्थिक उत्पादन में संलग्न होती है तथा उससे आय अथवा जीविका प्राप्त करते हैं। विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न मनुष्यों की आर्थिक क्षमता के निर्धारण में कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत एक सर्वोत्तम सूचक माना जाता है। इसके अध्ययन से आर्थिक विकास के स्तर का भी पता चलता है। रे (1978) ने स्पष्ट किया है कि क्रियाशील जनसंख्या किसी क्षेत्र विशेष के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण तथ्य है। दुरन्द (1975) के अनुसार सामाजिक रहन–सहन एवं आर्थिक विकास को मुख्यतः उस क्षेत्र की क्रियाशील जनसंख्या के उपार्जनकर्ताओं की जनसंख्या उसकी योग्यता और कुशलता, रोजगार प्राप्ति की नियमितता उपार्जित धन की मात्रा आदि ऐसे अनेक तत्व हैं, जो सामाजिक एवं आर्थिक विकास का स्तर निर्धारित करते है। समाज में क्रियाशील जनसंख्या का अधिकतम प्रतिशत आर्थिक समृद्धि और उच्च सामाजिक स्तर का परिचायक होता है, जबकि न्यूनतम प्रतिशत आर्थिक पिछड़ेपन का कारण बनता है।

सागर उच्च भूमि क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 42.77 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील है, जो क्षेत्र की अकार्यशील जनसंख्या से कम है। प्रादेशिक आधार पर क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या में विषमता परिलक्षित हुई है। क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत केसली विकासखण्ड (49.96 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ तथा न्यूनतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड (36.69 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि केसली विकासखण्ड में आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण कार्यशील जनसंख्या की अधिकता है, वहीं सागर विकासखण्ड में उच्च शैक्षणिक स्तर होने के कारण व्यक्तियों की क्रियाशीलता में देर से भागीदारी के कारण कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है (सारणी –1)।

निर्भरता अनुपात

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

कार्यशील तथा अकार्यशील जनसंख्या के अनुपात को निर्भरता अनुपात कहाँ जाता है। किसी भी क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या 15–59 आयु वर्ग में होती है तथा शेष आयु वर्ग में प्रायः आश्रित जनसंख्या होती है। अतः जिस जनसंख्या में बच्चों व वृद्धों की संख्या अधिक होती है, वहां निर्भरता अनुपात दर अधिक पायी जाती है अर्थात निर्भरता अनुपात उच्च होता है। परिणामतः विकास की गति मंद होती है। इसके विपरीत संक्रिय जनसंख्या (15–59 वर्ष) की अधिकता होने पर निर्भरता अनुपात कम तथा विकास की गति तीव्र होती है। इस प्रकार निर्भरता अनुपात मुख्यतः परिवार की आयु संरचना से प्रभावित होती है एवं परिवार की आर्थिक सहभागिता दर, आयु संरचना को प्रभावित करती है। इसी के साथ ही शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य एवं सामाजिक–आर्थिक दशाओं पर भी आयु संगठन का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव होता है। क्षेत्र में निर्भरता अनुपात ज्ञात करने लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया।

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{0–14 आयु वर्ग की जनसंख्या} + \text{60 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या}}{\text{15 से 59 आयु वर्ग की जनसंख्या}} \times 100$$

सागर उच्च भूमि क्षेत्र कें सर्वेक्षित परिवारों में कुल निर्भरता अनुपात 75.13 प्रतिशत है। बाल निर्भरता अनुपात (62.09 प्रतिशत) की तुलना में वृद्ध निर्भरता अनुपात (13.04 प्रतिशत) अपेक्षाकृत कम है। क्षेत्र में निर्भरता अनुपात के वितरण में क्षेत्रीय विषमता परिलक्षित हुई है। क्षेत्र में उच्चतम निर्भरता अनुपात जैसीनगर विकासखण्ड (86.91 प्रतिशत) में है, जबकि न्यूनतम निर्भरता अनुपात सागर विकासखण्ड (51.64 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ।

उच्च भूमि क्षेत्र में पुरूष निर्भरता अनुपात (71.76 प्रतिशत) की तुलना में महिला निर्भरता अनुपात अनुपात (79.16 प्रतिशत) अपेक्षाकृत अधिक है। क्षेत्र में सर्वाधिक पुरूष निर्भरता अनुपात गैरतगंज विकासखण्ड (80.60 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ। इसके अलावा बण्डा विकासखण्ड (80.59 प्रतिशत) में भी निर्भरता अनुपात अपेक्षाकृत अधिक रहा। वहीं सर्वाधिक महिला निर्भरता अनुपात जैसीनगर विकासखण्ड (96.25 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ। जबकि पुरूष (56.41 प्रतिशत) तथा महिला (45.83 प्रतिशत) दोनों में सबसे कम निर्भरता अनुपात सागर विकासखण्ड में दृष्टव्य हुआ, जो उच्च क्रियाशीलता दर को प्रदर्शित करता है ।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

मुख्य एवं सीमान्त कार्यशील जनसंख्या

जनगणना 1981 के अनुसार व्यक्ति के आर्थिक स्तर के आधार पर जनंसख्या को मुख्यतया मुख्य कार्यशील, सीमांत कार्यशील, एवं न कार्य करने वाली तीन श्रेणीयों में विभक्त किया गया है। मुख्य एवं सीमान्त श्रमिक जनसंख्या कार्यरत जनसंख्या कहलाती है जबकि कार्य न करने वाली जनसंख्या की गणना अकार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत की जाती है। आर्थिक क्रियाशीलता एवं आर्थिक स्तर का मापन एक वर्ष की अवधि में व्यक्ति की आर्थिक क्रियाशीलता (संलग्नता) के आधार पर किया जाता है। ऐसे व्यक्ति जो वर्ष में कम से कम 183 दिन अपने आप को आर्थिक क्रियाओं में संलग्न रखते हैं, उन्हें पूर्ण कालिक या मुख्य श्रमिक तथा ऐसे व्यक्ति जो वर्ष के आंशिक दिनों में (183 दिन से कम) आर्थिक कार्य में संलग्न रहते हैं उन्हें सीमांत या अल्पकालिक श्रमिक कहते है।

सारणी –2

सागर उच्च भूमि : मुख्य एवं सीमांत कार्यशील जनसंख्या, 2011

क्र.	विकासखण्ड	कुल कार्यशील जनसंख्या	मुख्य कार्यशील जनंसख्या		सीमान्त कार्यशील जनसंख्या	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सागर	260045	219967	84.59	40078	15.41
2	जैसीनगर	71432	54070	75.69	17362	24.31
3	राहतगढ़	55693	42203	75.78	13490	24.22
4	केसली	58427	40940	70.07	17487	29.93
5	बण्डा	92597	66644	71.97	25953	28.03
6	शाहगढ़	62416	48370	77.50	14046	22.50
7	गैरतगंज	53620	33766	62.97	19854	37.03
8	बेगमगंज	62664	43581	69.55	19083	30.45
कुल		716894	549541	76.66	167353	23.34

स्रोत : जिला जनगणना पुस्तिका 2011, जिला सागर एवं रायसेन, जनगणना कार्यालय भोपाल।

सागर उच्च भूमि क्षेत्र में जनगणना 2011 के आधार पर क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या में 76.66 प्रतिशत जनसंख्या मुख्य कार्यशील तथा 23.34 प्रतिशत जनसंख्या सीमांत कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है। स्थानिक आधार पर मुख्यकार्यशील जनसंख्या का उच्चतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड (84.59 प्रतिशत) में तथा न्यूनतम प्रतिशत गैरतगंज विकासखण्ड (62.97

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

प्रतिशत) में प्राप्त हुआ। इसके विपरीत सीमांत कार्यशील जनसंख्या का उच्चतम प्रतिशत गैरतगंज विकासखण्ड (37.03 प्रतिशत) में तथा न्यूनतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड (15.41 प्रतिशत) में प्रदर्शित हुआ (सारणी,2 मानचित्र–2)।

मुख्य कार्यशील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

मानव स्थानिक–कालिक संदर्भ में अपने क्रियाकलापों में परिवर्तन एवं परिमार्जन करता है। इसलिए किसी क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना मानव संसाधनों की परिवर्तनशील प्रक्रिया है। एक निश्चित समय और स्थान पर बहुआयामी मानवीय क्रियाकलापों द्वारा आर्थिक समृद्धि के आधार पर विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियां होती है। इसलिए सम्पूर्ण जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सामाजिक–आर्थिक एवं व्यवसायपरक उपादानों के प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ते हैं। सन् 1981 की जनगणना में व्यावसायिक संरचना को चार श्रेणियां कास्तकार, खेतीहर मजदूर, परिवारिक उद्योग तथा अन्य काम करने वाले, निर्धारित की गई। अध्ययन क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या के विभिन्न व्यवसायों का मापन मुख्य कार्यशील अर्थात पूर्णकालिक काम करने वाले व्यक्तियों के आधार पर किया गया है। व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत समस्त विकासखण्डों की कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या को आधार मानकर कृषकों, खेतिहर मजदूर, पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों तथा अन्य कार्यों में कार्यरत श्रमिकों के आधार पर विश्लेषित किया गया है (सारणी 3)।

सारणी –3

सागर उच्च भूमि : मुख्य कार्यशील व्यक्तियों की व्यावसायिक संरचना, 2011

क्र.	विकासखण्ड	कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या	काश्तकार		खेतिहर मजदूर		पारिवारिक उद्योग कर्मी		अन्य कर्मी	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सागर	219967	26304	11.96	34634	15.74	35418	16.10	123611	56.20

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

2	जैसीनगर	54070	14025	25.94	22712	42.00	7446	13.77	9887	18.29
3	राहतगढ़	42203	9571	22.68	12964	30.72	11954	28.32	7714	18.28
4	केसली	40940	13248	32.36	22919	55.98	1016	2.48	3757	9.18
5	बण्डा	66644	17928	26.90	24225	36.35	10904	16.36	13587	20.39
6	शाहगढ़	48370	15099	31.32	15025	31.06	7376	15.25	10870	22.47
7	गैरतगंज	33766	12320	36.49	12484	36.97	1765	5.23	7197	21.31
8	बेगमगंज	43581	15759	36.16	13708	31.45	4453	10.22	9661	22.17
कुल		**549541**	**124254**	**22.61**	**158671**	**28.87**	**80332**	**14.62**	**186284**	**33.90**

स्रोत : जिला जनगणना पुस्तिका 2011, जिला सागर एवं रायसेन, जनगणना कार्यालय भोपाल।

काश्तकार (कृषक)

कृषक या काश्तकार से अभिप्राय ऐसे श्रमिक (पुरूष/स्त्री) से है, जो स्वअर्जित अथवा शासन द्वारा प्रदत्त अथवा निजी व्यक्तियों द्वारा अर्जित या संस्थाओं द्वारा रूपये में या बटायी में प्राप्त की गई भूमि पर रोजगार के रूप में अकेले अथवा परिवार के साथ क्रियाशील हो, इसके अन्तर्गत कृषि कार्य का निरीक्षण एवं निर्देशन कार्य शामिल है (भारतीय जनगणना, 2011)।

अध्ययन क्षेत्र में कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या का 22.61 प्रतिशत भाग कृषक या काश्तकार के अन्तर्गत सम्मिलित है। उच्च भूमि में काश्तकार का उच्चतम प्रतिशत गैरतगंज विकासखण्ड (36. 49 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र के औसत प्रतिशत से अधिक है, जबकि न्यूनतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड (11.96 प्रतिशत) में प्रदर्शित हुआ, जो क्षेत्र के औसत (22.61 प्रतिशत) से लगभग आधा है।

उल्लेखनीय है कि सागर विकासखण्ड में काश्तकारों की संख्या में कमी का मुख्य कारण कृषि भूमि का बँटवारा, नगर का विस्तार तथा आबादी का ग्रामीण क्षेत्रों की ओर विस्तार है (सारणी 3, मानचित्र –3)।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

खेतिहर मजदूर

कृषि श्रमिक या खेतीहर मजदूर के अन्तर्गत वे लोग आते है जो व्यक्ति रूपये या अनाज के रूप में मजदूरी या पैदावार में हिस्सा लेकर किसी दूसरे व्यक्ति के खेत में काम करते है, खेतिहर मजदूर कहलाता है। क्षेत्र में कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या का 28.87 प्रतिशत भाग खेतिहर मजदूर के अन्तर्गत सम्मिलित है। उच्च भूमि क्षेत्र में खेतिहर मजदूर का उच्चतम प्रतिशत केसली विकासखण्ड (55.98 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र के औसत (28.87 प्रतिशत) से लगभग दो गुना कम है। इसके विपरीत खेतीहर मजदूर का न्यूनतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड में (15.74 प्रतिशत) दृष्टव्य हुआ, जो क्षेत्र के औसत से लगभग आधा है (सारणी क्र.–3, मानचित्र क्र.–3) ।

पारिवारिक उद्योग कर्मी

पारिवारिक उद्योग वह उद्योग है। जो परिवार के मुखिया द्वारा स्वयं या परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों के संबंध में यह कार्यकलाप घर या गाँव की सीमा के अन्दर एवं यदि परिवार नगरीय क्षेत्र में रहता है, तो उस मकान की चहारदीवारी में होना चाहिए। कार्य करने वालों में ज्यादा भागीदारी परिवार के मुख्या के साथ परिवार के अन्य सदस्यों की होनी चाहिए। इस प्रकार पारिवारिक उद्योग का आशय किसी वस्तु का उत्पादन या मरम्मत् से होता है, जिसके अन्तर्गत हाथकरधा, सिलाई, बुनाई, चटाई बनाना, फर्नीचर बनाना, बीड़ी व अगरवत्ती, उद्योग, सूत कातना, रंगाई, छपाई, रस्सी, बॉस की टोकरी तथा मिट्टी के बर्तन बनाना आदि कार्य सम्मिलित है।

सागर उच्च भूमि क्षेत्र की कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या का केवल 14.62 प्रतिशत भाग पारिवारिक उद्योग कर्मी के अन्तर्गत सम्मिलित है। पारिवारिक उद्योग की दृष्टि से क्षेत्र में उच्चतम प्रतिशत राहतगढ़ विकासखण्ड (28.32 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र के औसत (14.62 प्रतिशत) से अधिक है। जबकि पारिवारिक उद्योग कर्मी का न्यूनतम प्रतिशत केसली विकासखण्ड (2.48 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र के औसत से कम है। इस विकासखण्ड की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर है (सारणी क्र.–3, मानचित्र क्र.–3)।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

अन्य कर्मी

इस श्रेणी के अन्तर्गत कारखाने, वनरोपण, वाणिज्य, व्यापार, परिवहन निर्माण में काम करने वाले, राजनैतिक व सामाजिक कार्यकर्ता, सभी शासकीय कर्मचारी, ज्योतिषी तथा मनोरंजन करने वाले कलाकार आदि आते हैं।

उच्च भूमि क्षेत्र की कुल मुख्य कार्यशील जनसंख्या का केवल 33.90 प्रतिशत भाग इस वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित है। अन्य कार्यशील व्यक्तियों की दृष्टि से क्षेत्र में उच्चतम प्रतिशत सागर विकासखण्ड (56.20 प्रतिशत) में आंकलित है, जो क्षेत्र के औसत से अधिक है। उल्लेखनीय है कि सागर विकासखण्ड संभागीय मुख्यालय एवं नगरीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ वाणिज्य, व्यापार, परिवहन, राजनैतिक व सामाजिक कार्यकर्ता, सभी शासकीय कर्मचारी तथा मनोरंजन करने वाले कलाकार की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है जिस कारण इस विकासखण्ड में अन्य कार्यशील कर्मी की संख्या अधिक है। जबकि इसके विपरीत अन्य कर्मी का न्यूनतम प्रतिशत केसली विकासखण्ड (9.18 प्रतिशत) में प्राप्त हुआ जो क्षेत्र के औसत (33.90 प्रतिशत) से कम है। उल्लेखनीय है कि केसली विकासखण्ड में खेतिहर मजदूरों की संख्या अधिक है और इस विकासखण्ड में नगरीकरण नगण्य है। इस कारण अन्य कर्मी की संख्या अपेक्षाकृत कम है (सारणी क्र.–3, मानचित्र क्र.–3)।

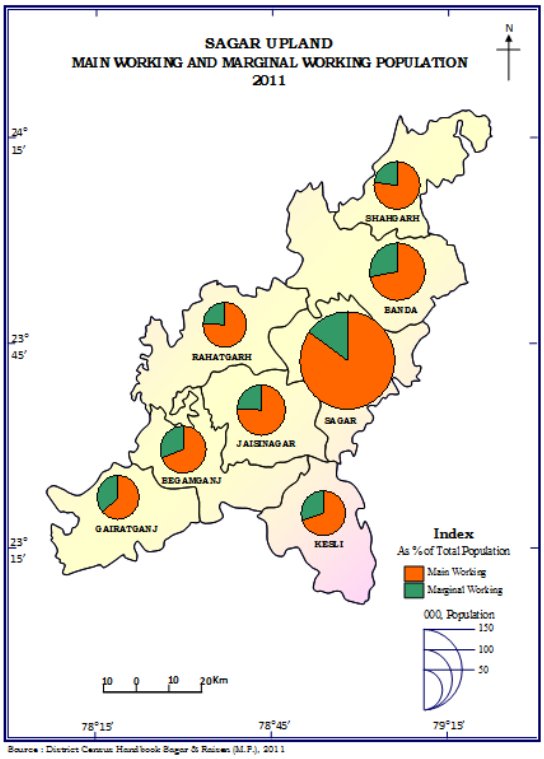

Map 2

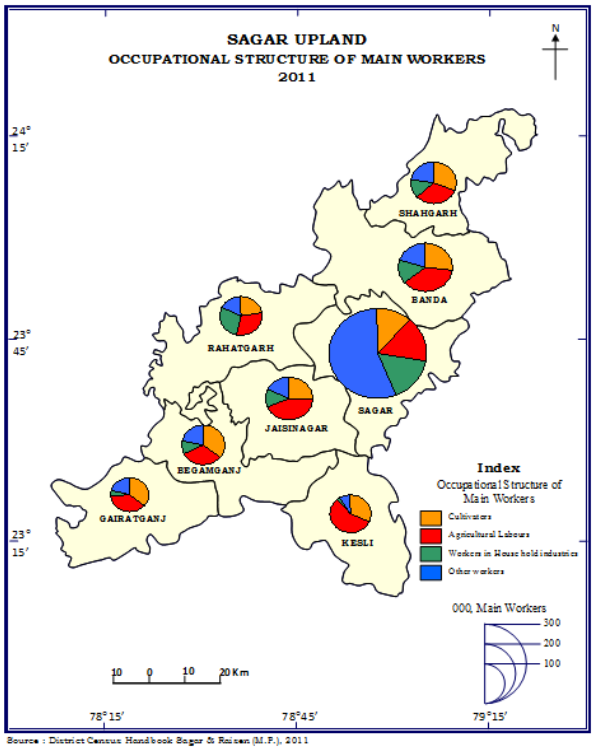

Map 3

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में अकार्यशील जनसंख्या की अधिकता ने बहुत सी सामाजिक–आर्थिक समस्याओं को सृजित किया है। जिसके परिणामस्वरूप एक ओर जहाँ क्षेत्र के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है, वहीं दूसरी ओर यह निम्न आय, निम्न जीवन स्तर, अशिक्षा तथा गरीबी के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार है।

सन्दर्भ सूची

1. मौर्य, रामकुमार, 2020, अयोध्या (फैजाबाद) जनपद उ.प्र. में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप का
अध्ययन, ***उत्तर प्रदेश ज्याग्राफीकल जर्नल*** (कानपुर), अंक 25 पृ. 131–138।
2. शर्मा, श्रीकमल (1983) : मध्य प्रदेश में क्रियाशील जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना और
कृषि विकास में संबंध ***विकासशील भूगोल पत्रिका,*** वर्ष 2, संख्या 1, पृष्ठ 1 –12।
3. भारतीय जनगणना (2011) : ***जिला जनगणना पुस्तिका रायसेन*** , जनगणना कार्यालय भोपाल
म.प्र.।
4. भारतीय जनगणना (2011) : ***जिला जनगणना पुस्तिका सागर***, जनगणना कार्यालय भोपाल
म.प्र.
5. भारतीय जनगणना (2011) : जनगणना कार्यालय मध्यप्रदेश भोपाल।
6. प्रसाद, गोविन्द, गीतान्जलि एवं सिंह, प्रमोद कुमार (2007) : ***जनसंख्या संसाधन एवं सामाजिक – आर्थिक खपान्तरण,*** नई दिल्ली, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, पृ. 100–313।
6. Agrawal, S.N. (1977): ***India's Population Problem,*** New Delhi: Tata Mc Grow Hill, Publishing Company Ltd., p.59.
7. Sharma, R.C. (1975): ***Population Trends Resources*** and Environmental Hand Book on Population Education, Delhi: Dhanpat Rai & Sous p. 34.
8. Durand, J.D. (1975): ***The Labour force in Economic Development***: A Comparison of International Census Data, 1946-66. New Jersey, Prineeton University Press, P. 48.
9. Ray, P. (1978): "Quantitative Mapping, of working population, ***Geographical Review of India,*** Vol. 40, No. 4, p. 312.